समरसता गतिविधी

3 जून-2018 पहली बार गुजरात राजकोट पधारे वि.हि.परिषद नवनियुक्त अ.भा.अध्यक्ष मा.श्री विष्णु सदाशीव कोकजेजी स्वागत नागरिक अभिवादन कार्यक्रम राजकोट स्वामिनारायण गुरुकुल गोंडल रोड संम्पन्न हुआ। मंच पर प.पू. स्वामी परमात्मानंदजी महाराज, प.पू. स्वामी श्रीदेवकृष्णदासजी स्वामी तथा नवनियुक्त अध्यक्षश्री मंच पर वि.हि.परिषद के संयुक्त महामंत्री मा.श्री डॉ. सुरेन्द्रजी जैन एवं कार्यक्रम का संचालन करते श्रीमान हरेशजी चौहाण क्षेत्रिय बजरंगदल संयोजक। राजकोट महानगर की 80 विविध NGO ने नवनियुक्त अध्यक्षजी का स्वागत किया था। इस कार्यक्रम में प.पू. सदगुरु देवकृष्णदासजी स्वामी, प.पू. त्यागवल्लभदासजी स्वामी, प.पू.श्री अक्षरवल्लभदासजी स्वामी, कोठारी स्वामीश्री निलकंठ स्वामी, डॉ. जयंतीभाई भाडेशीया (आर.ऐस.ऐस. पश्चिम क्षेत्र संघलाचकजी) पधारेथे।

प. पू. संतो द्वारा सन्मान नवनियुक्त अध्यक्षजी का सन्मान

प.पू. स्वामीश्री परमात्मानंदजी सरस्वतीजी द्वारा शाल अर्पण कर स्वागत

नवनियुक्त अध्यक्षजी का राजकोट महानगर की NGO की पदाधिकारीओ द्वारा स्वागत

नवनियुक्त अध्यक्षजी का सिख समाज के अग्रणीय द्वारा स्वागत सन्मान

नवनियुक्त अध्यक्षजी का विश्व हिन्दू परिषद के पदाधिकारीओ द्वारा स्वागत
श्रीमान शांतीलालजी रुपारेलीया - अध्यक्ष राजकोट महानगर वि.हि.प. तथा श्रीमान हरीभाई डोडीया सौराष्ट्र प्रांत उपाध्यक्ष तथा अन्य कार्यकर्ता गण।

दि. २७ मई से ३ जून सौराष्ट्र प्रांत बजरंगदल कार्यकर्ता प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हुआ। वर्ग में मा.श्री दिलीपभाई त्रिवेदी - गुजरात प्रदेश अध्यक्ष वि.हि.प. अपने विचार रखते हुए। मंच पर मा.श्री हरीभाई डोड़ीया, मा.श्री शांतिलालभाई रुपारेलीया, मा.श्री किरीटभाई मिस्त्री तथा श्री हरेशभाई चौहाण क्षेत्रिय बजरंगदल संयोजक।

...संपादकीय

आत्मीय बंधुओ,
सादर प्रणाम ।

वर्तमान में समाज विभाजक शक्तियां अतीत के कुछ लज्जाजनक प्रसंगो का सहारा लेकर, तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर, शास्त्रो और घटनाओं की विभाजनकारी व्यारव्या कर समाज में बैमनस्प उत्पन्न करने सक्रिय, सधन प्रयास कर रही है। दुर्भाग्य से कुछ बंधु हमसे नाराज होकर एसी देशविरोधी - विभाजकारी शक्तिओं का हाथा बन कर हिंदू समाज में भेद-खड़ा करने के अपने निजी स्वार्थ हेतु सक्रीय हुए है । यह समाज विरोधी - विभाजनकारी शक्तिर्यां हिन्दू समाज में बढ़ती समरसता, एकता के सफल प्रयासो से विचलित है । इस कारण एक जुट होकर अपने षंडयंत्रों मैं ओर अधिक सक्रिय हो गई है । ये प्रचार माध्यम - शोशीयल मीडीया, वैमनस्प पूर्ण साहित्य - लेखन, प्रचार, प्रसार, दूषित मानसिकता व भ्रमित मानसिकता से युक्त जन, कार्यकर इनके साधन बन रहे है । ये सामाजिक एकता, समरसता के संपूर्ण प्रयासों को जन सामान्य के सामने न आने देने के लिए कार्यरत है और वंछित वर्ग-अनुसूचित जाति वर्ग के हमारे समाज बंधुओं के साथ दुर्भाग्य पूर्ण लज्जाजनक घटनाओं को पुरे देश में प्रचारित कर पारस्पारिक वैमनस्य बढ़ाना, कार्यकर्ताओं में भ्रमणा खडी करने चाहते है । यह सत्य है कि हिंदू समाज में जन्माधारित उच्चता का भाव गहरी जड़े जमाये है जन्म के व कुल के आधार पर श्रेष्ठता की धारणा अमानवीय, अवैज्ञानिक, शास्त्र विरुद्ध, भारतीय संविधान विरुद्ध है । हम इस कलंक को मिटाने हेतु क्रुत - संकल्पित है संघ परिवार के दर्शन, आचार, व्यवहार में इस विकृति का कभी कोई स्थान नहीं रहा । हमारे हिंदू समाज की एकता पर मंडराते खतरों को देखते हुए इस कलंक से यथा संभव शीध्रता से मुक्ति पाना आवश्यक है ।

कभी कभी कार्य करते करते हम सफलता के समीप होते है लेकीन हम निराश होकर प्रयास बंध कर देते है । सफलता और निष्फलता के बीच कुछ छोटासा ही अंतर - होता है हम धीरज खो बेठते है । इतिहास के पन्नो पर एसी अनेक घटनायें देखने को मिलती है । ''रीडर्स डायजेस्ट'' अग्रेजी मासिक में एक सत्यकथा प्रकाशित हुई थी। ''सफलता और निष्फलता के बीच कीतना अंतर है ?'' प्रथम पारितोष जीतने वाला एक अमेरिकन युवा इजनेर था। ''एक अमेरीकन कंपनी दक्षिण आक्रिका में सोने की खाण में सोना निकाल ने का का करती थी । ९० फीट खुदाई के बाद भी सोना प्राप्त न होने के वजह से कंपनी ने खुदाई का काम बंध कर दिया । हमे सोना मिलेने वाला नहीं है । तो यहाँ पर इतना बडा तंत्र यहाँ रखना - खर्चा करना ठीक नहीं है । कंपनी ने सभी कारोबार बंध कर वापस अमेरिका चली गई । अमेरिका जाकार कंपनी के मेनेजिंग डायरेकटर ने अखबार में विज्ञापन छपवाया की दक्षिण आफ्रिका में अमेरिकन कंपनी की जो जमीन है वह सस्ते में बेचना चाहती है । विज्ञापन देखकर एक युवा इजनेर ने कंपनी की ओफिस जाकर जमीन खदीद ली । उसने विचार कीया की कंपनी ने ९० फीट तो खुवाई की है में भी जब कि सोना नहीं मिलेगा तब तक खुदाई करता रहुंगा । एसा दृढ निश्चय कर उसने काम प्रारंभ कीया । आगे तीन फीट और खुदाई की विशाल सोना का भंडार मिला । दुनिया का सबसे बड़ा सोने का भंडार - उसे मिला और बढी प्रसिध्धी भी मिली। इस युवा इजनेर को इस सोने के भंडार के बारे में पूछे सवाल में उसने कहा की ''सफलता और निष्फलता के बीच सीर्फ तीन फीट का अंतर था । सफलता का आधार अपने मन - हृदय में होता है ।

परम स्नेही कार्यकर्ता बंधुओं... अपना कार्य भगवद कार्य है इसमें कोई शंका नहीं । प्रार्थना में हम रोज कहते है की है भगवान, यह तेरा ही कार्य हम कर रहे है । (त्वदीयाय कार्याय)... लेकीन वर्तमान परिस्थिति जो गतिसे विषम बन रही है इसे देखकर हम इसे ठीक कर पायेंगे की नहीं एसी शंका हमारे मन में पेदा होती है । ठीक है हम रोज प्रार्थना में कहते है की यह भगवद् कार्य है फिर भी यह विचार में हमारा दढ विश्वास है क्या ? समरसता का काम करने वाले - हिंदू एकता कार्य करने वाले की संख्या कीतनी ? उनका प्रभाव देशभर में कीतना ? एसे विचार हमारे मन में आया करते है । यह भगवद कार्य है, फिरभी विचार मन मैं होता है तो कार्य की सफलता को लेकर शंका क्यों होती है चिंता क्यों होती है ? हमे हमारे अंतरमन में देखना चाहिए की क्या हम हृदयपूर्वक हम मानते है की यह भगवद कार्य है तो चिंता क्यों ? यश... अपयश

(अनुसंधान पृष्ठ - १०)

'समरसता सेतु'

वर्ष - 3 अंक - 19

संपादक : देवजीभाई रावत
सहसंपादक : नरेश रावत, रशेष रावल, बिपीन पंचाल,
संरक्षक : प. पू. महंत श्री 1008 शंभुनाथ महाराज - झांझरका, गुजरात (सांसद राज्य सभा)
मा. विनायकरावजी देशपांडे - अ.भा.संगठन महामंत्री वि.हि.प.
मा. श्री मधुभाई कुलकर्णी अ.भा.कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री इन्द्रेशकुमार अ.भा. कार्य कारणी सदस्य RSS
मा. श्री के.वी. मदनन अ.भा. उपाध्यक्ष वि.हि.प.(केरल)
मा. श्री अधीन पटेल महामंत्री उत्तर गुजरात वि.हि.प.
हिन्दी परामर्शदाता : डॉ. भारती अग्रवाल / श्री कृष्णपालसिंह भदौरिया
कानूनी परामर्शदाता : हसमुखभाई पटेल (अधिवक्ता - गु.हा.कोर्ट)
प्रचार - प्रसार - मिडीया : श्री दिपक मिस्त्री
व्यवस्था : श्री रमेशकुमार

संपर्क - पत्र व्यवहार

धर्मादा हॉस्पिटल, गांधी आश्रम के पास, अमदावाद - 380 027. गुजरात.
संपर्क : 079-27553237 • मो.: 08980000327
E-mail : samrastasetu2010@gmail.com • Web : http:/vhp.org

महर्षि दयानन्द की राष्ट्र को देन

प्रो. सुधीर कुमार आर्य
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान
जे. एन. यू, नई दिल्ली, ११००६७.

महर्षि दयानन्द उन्नीसवीं सदी के उन नायकों में से अकेले महापुरुष थे जिन्होंने भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक धरातल को सबसे अधिक प्रभावित किया है । उनके समकालीन व समवर्त महापुरुषों का न तो चिन्तन से इतना व्यापक प्रभाव था न वे उनके द्वारा प्रारम्भ लिए गए कार्यक्रम भारतीय समाज की सम्पूर्ण आवश्यकताओं के ध्यान में रखकर बनाए गए थे ।

महर्षि की एक विशेषता यह थी उनका व्यक्तित्व बहुत विराट् था । वे वैदिक वाडगमय, संस्कृत व्यायकरण, धर्मशास्त्र एवं दर्शन के अद्भुत विद्वान थे । योग साधना के उच्चतम शिखर को प्राप्त कर चुके थे । बुद्धिसंगत तथा वैज्ञानिक चिन्तन के आग्रहय थे । यदि कहा जाए कि महाभारत के बाद पिछते ५००० वर्षो के उन जैसी प्रतिभा का धनी कोई अन्य वैदिक विद्वान नहीं हुआ, तो कोई अतिश्योकित नहीं होगी ।

उनकी दूसरी विशेषता यही रही कि भारतीय समाज को जितने निकट से इन्होंने देखा, वैसा सौभाग्य किसी दूसरे महापुरुष को प्राप्त नहीं हुआ । सत्य की खोज में जब से उन्होंने घर छोडा, वे निरन्तर देश के विभिन्न भागों में भ्रमण करते रहे तथा समाज के हर वर्ग से संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को साक्षात् देखा एवं अनुभव किया । यही कारण है कि राष्ट्रीय समस्याओं के सन्दर्भ में उनका चिन्तन सर्वागीण, मौलिक, बुद्धिसंगत, तर्कपूर्ण एवं पश्चिम के प्रभाव से अछूता था । पुरातन दिखायी देते हुए भी आधुनिक था ।

उदाहरण के लिये भारतीय समाज में जातिगत आधार पर प्रचलित भेदभाव की समस्या देश के बडे बहुत वर्ग को अछुत के रूप में जीने के लिये विवश कर रही थी । समाज के इस कोढ को दूर करने के लिये महात्मा गान्धी, भीमराव अम्बेडकर एवं अन्य कई महापुरुषों ने पर्याप्त चिन्तन कर समाधान ढूंढने की कोशिश की । महात्मा गान्धी छुआछुत के विरोधी होते हुये भी वर्तमान जाति व्यवस्था के पोषक बने रहे । अम्बेडकर जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह का झंडा बुलन्द करते हुये भी कोई स्पष्ट समाधान न दे सके । महर्षि दयानन्द पहले महापुरुष हैं जिन्होंने जन्म आधारित जाति व्यवस्था पर कडा प्रहार करते हुये उसके शास्त्रिय आधार को ही समाप्त कर दिया । तथा गुण, कर्म, स्वभाव, एवं योग्यता के अधारशिला रखी जहां छुआछुत के लिये कोई स्थान नहीं था, साथ ही शूद्रों को ब्राह्मणादि वर्गों एवं ब्राह्मणादि को शूद्र वर्ण में आने की स्वतन्त्रता थी । यह सब उन्होंने अपने मन से अथवा कपोल कल्पना से नहीं किया था । यह व्यवस्था वेद और मनुस्मृतियों के आधार पर दी थी । यह वही मनुस्मृति है जिसको बिना पढे व बिना समझे आज के तथाकथित कुछ बुद्धिजीवि व राजनेता भरपेट निन्दा करते हैं । तथा उसकों जलाने में गौरव का अनुभव करते हैं ।

ऐसा नहीं है कि महर्षि केवल व्यवस्था देकर शान्त हो गये । यद्यपि गुण, कर्म, व स्वभाव आधारित वर्णव्यवस्था शासन द्वारा ही निर्धारित एवं संचालित हो सकती है, तथापि उन्होने आर्यसमाज व आर्यसमाज से सम्बन्धित जो संस्था ये बनायी उनके किसी प्रकार के भेदभाव व छुआछुत का स्थान नहीं था । वर्तमान में भी आर्यसमाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं मे, गुरुकुलों में, एवं डी.ए.वी के शिक्षा संस्थानों में जातिगत आधार छुआछुत वर्तमान में भी आर्य विद्यालयों, गुरुकलों तथा डी.ए.वी के शिक्षण संस्थानों में ही व्यवस्था लागू है । इतना ही नहीं, ब्राह्मणेतर समुदाय के लोगों को, जिनके बडी संख्या में दलित भी सम्मिलित हैं, ब्राह्मण बनने का मौका अवसर दिया गया । भारतीय समाज के बहुत बडे वर्ग ने एसे पण्डितों द्वारा कराये गये संस्कारों को स्वीकार करके उन्हें नये स्वरुप में मान्यताएं भी दी है । ऐसे समय में जब कि पूरा शासन तन्त्र, सामाजिक संगठन व राजनैतिक पार्टियाँ जन्म आधारित जाति व्यवस्था की जड़ों को पोषित करने में लगे हों, इस प्रकार का शान्तिपूर्ण परिवर्तन किसी क्रान्ति से कम नहीं है ।

महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने किस प्रकार हर गाँव में एवं शहर में जाकर दलितों के सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाने के लिये संघर्षकिया था । उस दौरान वे किस प्रकार अपने समाज के लोगों के कोप का भाजन बने । यह एक पृथक विषय है पर निश्चितरुप से हमारे लिए आर्यसमाज का इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय है । वास्तविक सामाजिक संरचना स्थापित करने के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा किया गया प्रयास उनको महापुरुष के पद पर आसीन करने के लिये पर्याप्त था । पद में केवल यही एक सीमित नहीं रहे । उन्होंने समाज के आधे हिस्से को जो सैकडों वर्षों से अपना धरातल ढूढने के लिए बेचैन था, आधार दिया, स्वतन्त्रता की शिक्षा एवं सम्मान दिया । साथ ही पुरुषों के समान अधिकार देकर स्त्रियों के साथ होने वाले भेद-भाव को समाप्त किया । साथ ही बालविवाह तथा बेमेल विवाह तथा विरोध कर विधवा विवाह की प्रथा को प्रारम्भ करने का श्रेय महर्षि को ही जाता है ।

स्वाध्याय के प्रथम मन्त्रदाता महर्षि ही थे । सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय व वेदभाष्य में महर्षि ने स्थान-स्थान पर आर्यो के चक्रवर्ती साम्राज्य की कामना, किसी विदेशी से पराधीन न होने की कामना, तथा सदा स्वतन्त्र रहकर जीने की अभिलाषा का अल्लेख किया है । मनुष्य की परिभाषा करते हुए जिस अधर्मी शासन का विनाश करने के लिए प्राणों की परवाह न करने का आहवान महर्षि ने किया था, वह ब्रिटिश शासन ही था ।

तभी तो उनसे व उनके ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर हजारों लोग स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पडे तथा सैकडों युवक शहीद हो गए । उनके ही

शिष्य श्यमाजी कृष्ण वर्मा ने लन्डन में India house की स्थापना की तथा भारत से अध्ययन हेतु आने वाले छात्रों को क्रान्ति का सन्देश दिया । इन्हीं से प्रेरणा पाकर वीरसावरकर, मदनलाल ढींगरा, सरदार ऊधम सिंह जैसे न जाने कितने क्रान्तिकारी निकले जिन्होंने अपना सर्वस्व मातृभूमि के चरणों में समर्पित कर दिया । सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल, अस्फाक उल्ला खां, भाई परमानन्द, भाई बाल मुकुन्द, राजगुरु, सुकदेव, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द आदि आर्य क्रान्तिवीर महर्षि के विचारों से प्रेरणा लेकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में संघर्ष कर रहे थे ।

महर्षि दयानन्द का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि १८६७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को कुचल देने के बाद अग्रेजी शासन यह मान बैठे थे कि भारत में अब उनके शासन को कोई चुनौती देने वाला नहीं रहा, क्योंकि सारे राजे, रजवाडे, बादशाह समर्पण कर चुके थे, समाप्त हो चुके थे । उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि इस अकिंचन सन्यासी उनके शासन को चुनैती देगा तथा उनके विद्रोह से एसे अग्नि प्रज्वलित होगी जिसमें पूरा अग्रेजी शासन स्वाहा हो जायेगा। इसी बात को रेखांकित करते हुए एक अग्रेज अधिकारी अपनी पुस्तक *'India unrest'* में लिख में लिखता है -Where there is aryasamaj, There is unrest and there is muting. अर्थात् जहाँ आर्य समाज है, वहीं अशान्ति है एवं वहीं विद्रोह हो रहे हैं । एक और षड्यन्त्र चल रहा था, अंग्रेजी शासक एवं उनके उत्साही इसाई मिशनरीज से मिलकर वेद और वैदिक साहित्य के बारे में अत्यन्त भ्रामक, तथ्यहीन एवं कलुषित चिन्तन प्रस्तुत कर रहे थे । वे यह जानते थे कि भारतीय समाज का आधार वेद है, यदि उनके प्रति भारतीय जनमानस में हेय दृष्टि पैदा हो जाती है तो उनको ईशा की शरण में लाना आसान हो जायेगा, उनको नियन्त्रित करना आसान होगा साथ ही साथ यदि समाज में विघटन होता है तो भी उसका लाभ उन्हें ही होगा । इसीलिए वेदों को गडरियों के गीत एवं प्रमत्त गीत बताया जाने लगा । उन्हें निम्न स्तरीय विचारों का संकलन सिद्ध करने का प्रयास किया जाने लगा । सुरापान एवं मांसभक्षण जैसे विषयों की खोज होने लगी । साथ ही आर्य द्रविड के रुप में एक नया सिद्धान्त स्थापित किया गया, जिसके अन्तर्गत आर्यों को एक विदेशी शासक के रूप में बाह्य आक्रमणकारी तथा द्रविड को यहां का मूल निवासी के रुप में चित्रित किया गया ।

महर्षि दूरदर्शी थे, वे अंग्रेजो के वास्तविक अभिप्राय को समझ चुके थे अत : उन्होंने घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा वैदिक साहित्य एवं संस्कृत ग्रन्थों में इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि आर्य विदेशी आक्रमणकारी थे तथा बाहर से आये थे । उन्होंने केवल घोषणा ही नहीं की अपितु तर्क के आधार पर इनको सिद्ध भी किया । जैसे तैसे वेद के विषय में नया अनुसंधान हो रहा है, महर्षि का चिन्तन सत्य सिद्ध हो रहा है । ऐसे चिन्तक, मनीषी व विलक्षण प्रतिभा के धनी महर्षि दयानन्द ही सच्चे अर्थों में 'भारत भाग्य विधाता' कहे जाने के योग्य हैं ।

सामाजिक समरसता अभियान- संगठनात्मक प्रवास एवम् जनजागृति हेतु संमेलन संपन्न हुए ।

दिनांक 21/5 मालवा प्रान्त - इंदौर शहर में श्री सिंधुभवन होल, अन्नपूर्णा मंदिर के पास इंदौर, सांयम ५ बजे समरसता गोष्ठीका आयोजन कीया गया । विविध जाति बिरादरी के मुखीयों का अभिवादन एवम् सन्मान कार्यक्रम में वर्तमान परिप्रेक्ष्य मैं सामाजिक समरसता का महत्त्व और हमारी भूमिका विषय पर केन्द्रीय विश्वहिंदू परिषद के सहमंत्री एवम् सामाजिक समरसता अभियान के केन्द्रीय मंत्री श्रीमान देवजी रावतने उपस्थित प्रबुद्ध नागरिक सामाजिक मुख्यीया तथा सभी कार्यकर्ता बंधु गण 175 से ज्यादा संख्या में उपस्थित श्रोताओं के समक्ष रखा ।

समरसता गोष्ठी के बाद कार्यकर्ता बैठक का आयोजन हुआ । आगामी कार्यक्रम - संगठन नियुक्तीयोंका बिचार किया गया ।

इंदौर के इस सामाजिक समरसता गोष्ठी कार्यक्रमको सफल बनाने हेतु विश्वहिंदू परिषद की संपूर्ण टीम तथा मा. श्री विभाग संगठन मंत्रीश्री तथा इंदोर विभाग के समरसता प्रमुख श्री दिनेशजी सेन सभीने ऊत्साहपूर्वक कार्य प्रवास कर कार्यक्रम सफल बनाया था । श्री विरेन्द्रजी प्रांत समरसता प्रमुख खास उपस्थित रहे । श्री मुकेश चौधरी, श्री दिनेशजी सेन और विभाग संगठन मंत्रीजीने परिश्रमकर कार्यक्रम सफल कीया ।

मध्यभारत प्रान्त में इटारसी शहर में दिनांक 22/5 को एक विशाल समरसता गोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन हुआ । 250 से ज्यादा कार्यकर्ता - बंधु एवम् सामाजिक मुखीयाओंकी उपस्थिति रही । तपती धूप में बडी संख्या में कार्यकर्ताओंने उपस्थित रहकर समरसता कार्य करने का संकल्प लीया गया । इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु श्रीमान गजानंदजी तिवारी और उनकी टीमने उत्साह पूर्वक भाग लीया । कार्यक्रम के बाद दुर्गावाहिनी संयोजिका श्री नेहाजी के घर भोजन बाद प्रस्थान हुआ ।

विभाग के मंत्री प्रांत समरसता प्रमुखश्री सुनीलश्री यादव तथा अन्य सभी कार्यकर्ताओंने सहभागीता की ।

हरियाणा - रोहतक शहर में दिनांक 30/5, 31/5 दो दिवसीय सामाजिक समरसता - विषय गोष्ठी एवम् संपर्क अभियान चलाया गया ।

रोहतक शहरमें दिनांक 30/5 को शहर की प्रसिद्ध विद्यालय सरस्वती विद्यामंदिर के आचार्यो समक्ष समरसता के विषयकी प्रस्तुति की गई । श्रीमान संजय सोनीजी, श्रीमान प्रधानाचार्यजी तथा श्री अमीतजी प्रांत समरसता प्रमुख खास उपस्थित रहे । 35 से 40 आचार्य की सहभागीता रही ।

सायंम् - विश्व हिंदू परिषद कार्यलयमें विविध जाति - बिरादरी के मुखिया की 'समरसता गोष्ठी' आयोजन हुआ । शहर के गणमान्य प्रबुद्ध जन - तथा जाट - ब्राह्मण, क्षत्रिय, बेरवार, वाल्मीकी इत्यादी समाज के मुखीया 70 से ज्यादा कार्यकर्ता बंधु - भगिनी उपस्थित रहे । विश्व हिंदू परिषद के प्रान्त मंत्री श्री प्रद्युम्नजी खास उपस्थित रहकर समरसता कार्यकी भूमिका रखी । जीला अध्यक्षश्री शिशपालजी, जिल्ला मंत्री श्री जगदत्त शर्माजी, आचार्यश्री बलवीरजी, डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्माजी, श्री सत्यवीर शास्त्रीजी, जिल्ला बजरंगदल संयोजक श्री मनीष नारणजी तथा श्री ईन्द्रजीत भारद्वाज एवम् सुभाष आहुजाजी संपर्क प्रमुख उपस्तित रहे । विश्व हिंदू परिषद एवम् विश्व पदाधिकारी तथा प्रान्त समरसता अध्यक्षश्री डॉ. लक्ष्मीनारायणजी शर्मा - प्रांत प्रमुख श्री अमीतजी ने भी गोष्ठी में सहभागीता की ।

सभी कार्यकर्ता बंधुओ के साथ प्रांत बैठक के रुप में बैठना हुआ । 7 जिलो से 10 कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

31/5 को नारनोला शहरमें कार्यकर्ता बैठक मा. श्री मुकेशजी सेन कोलेज में संप्पन हुई । जीला से 12 पदाधिकारी उपस्थित रहे ।

जम्मु काश्मीर में सामाजिक समरसता गोष्ठी संप्पन मा. प्रान्त संघचालक श्री ब्रिगेडीयर सचेतसिंहजीश्री उपस्थित रहे ।

दिनांक 25/5 जम्मु - विश्व हिंदू परिषद कार्यालय होल में "समरसता गोष्ठी" कार्यक्रम मा.श्री संघचालकश्री तथा अनेक सामाजिक मुखीयाओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ । जम्मु शहर से 75 से ज्यादा प्रबुद्ध सामाजिक अग्रणीय तथा प्रांत विभाग सीर के विश्व हिंदू परिषद - बजरंगदल दुर्गावाहिनी महिला विभाग के कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

मा. प्रान्त संघ चालक श्री सचेतसिंहजी ब्रिगेडीयरजी ने समरसता की भूमिका मा.श्री देवजीभाई रावत केन्द्रीय मंत्री श्री सामाजिक समरसता विभागश्रीने मुख्य वक्ता के नाते विषय की प्रस्तुति की गई । विश्व हिंदू परिषद के प्रान्त अध्यक्ष श्रीमान लीलाकरणजी तथा कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमान सुरेशजी, श्री विशालजी प्रांतमंत्री खास उपस्थित रहे । मा.श्री पुरसोत्तमजी प्रान्त समरसता प्रमुख श्रीने कार्यक्रम का संचालन एवम् व्यवस्था संभाली । मा. श्री अमर क्षत्रीय राजपूत सभा - श्री नारायणसिंहजी - डोगरा सदर सभा के श्रीमान गुलचेनसिंहजी - ब्राह्मीण सभाके श्री वेदप्रकाशजी - महाजन सभा के श्री रमेश गुप्ताजी - कश्यप समाज सभा के श्री मुरारीलाल मलहोत्रा - बरवाला समाज - श्री वाल्मीक समाज ईत्याति जाति बिरादरी का प्रतिनिधित्व रहा । मा. श्री डॉ. विक्रांतजी समरसता प्रांत प्रमुख (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) खास उपस्थित रहे ।

कार्यकर्ता बैठक में आगामी समय मा. संगठनीय कार्य - कार्यक्रमो का आयोजन - SC/ST सेवा वस्तीओंका संपर्क : संवाद - बेठक वगेरे का विचार - विमर्श आयोजन कीया गया । जम्मु विश्व हिंदू परिषद के सभी कार्यकर्ताओंने समरसता गोष्ठी सेमीनार सफल करने हेतु अधिक परिश्रम किया । प्रांत मंत्रीश्री अभिषेकजी भी उपस्थित रहे ।

हिमाचल प्रान्त - पालनपुर में सामाजिक समरसता गोष्ठी एवम् - प्रेसवार्ता संप्पन ।

पालनपुर प्रेस क्लब में दिनांक 26/5 गणमान्य पत्रकार विविध प्रसिद्ध दैनिक अखबार के प्रतिनिधिओं समक्ष प्रेसवार्ता का आयोजन था । मा. श्री देवजीभाई रावतजी ने आगामी हिमाचल प्रान्त में सामाजिक समरसता निर्माण कर - "अस्पृश्यता मुक्त" हिमाचल - समरसता प्रदेश बनाने की बात कही । सभी महापुरुषो की ज्यंति - विविध धार्मिक अनुष्ठानो - सहभोज - कन्यापूजन कार्यक्रमो का आयोजन की बात कही ।

पालमपुर में वीएचपी पदाधिकारी पत्रकारों को संबोधित करते हुए ।

पालमपुर (जसवंत) : विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय मंत्री एवं राष्ट्रीय समरसता प्रमुख देव जी रावत ने पालमपुर में पत्रकार वार्ता में कहा कि वीएपची हिन्दू समाज में एकता, समरसता का प्रयास कर रही है । उन्होंने कहा कि छुआछूत को समाप्त करना, समरस समाज के द्वारा देश को बचाना उनका लक्ष्य है । उन्होंने कहा कि आने वाले समय में पूरे प्रदेश में छुआछूत समाप्त करवाने की योजना है । इस विषय पर तहसील, जिला स्तर पर समरसता यज्ञ करना, सभी जाति धर्म के लोगों को उसमें बुलाना, कन्या पूजन, पूरे प्रांत में गोष्ठियां आयोजित कर छुआछूत मुक्त भारत के निर्माण की नींव रखी जायेगी । रावत ने कहा कि हिन्दू समाज मे सभी को सामाजिक बराबरी मिले, इसके लिए जागरुकता फैलाई जाएगी । सामाजिक समरसता लाने के लिए वीएचपी एकजुटता से पूरे प्रांत में कार्य करेगी । उन्होंने कहा कि समाज के महापुरुषों की जयंतियां समाज के सभी वर्गो को एकजुट कर मनाई जाएगी । साथ ही समाज में गरीब बस्तियों में बच्चों के लिए फ्री कोचिंग क्लास, महिलाओं के लिए सिलाई कार्यक्रम चलाना भी उनका मकसद है । रावत ने कहा कि मुख्यता तीन बिंदुओं पर वि.हि.प. कार्य कर रही है, जिसमें देव दर्शन सभी के लिए हो, पानी सभी को एक जगह से मिले, मृत्यु उपरांत सभी को श्मशान पर अंतिम संस्कार के लिए एक ही जगह मिले । इस मौके पर उनके साथ कांगड़ा चम्बा के उपाध्यक्ष, बजरंग दल के जिला संयोजक अक्षय, बजरंग दल के प्रखंड प्रमुख संदीप शर्मा, आदर्श शर्मा वीएचपी के जिला संगठन अध्यक्ष, उपाध्यक्ष राजेश व्यास सहित वीएचपी कार्यकर्ता उपस्थित थे । पालनपुर जिला विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं की गोष्ठी एवम् बैठक श्री राधाकृष्ण मंदिर में संप्पन हुआ । 60 से ज्यादा उपस्थित रहे । विश्व हिन्दू परिषद के विभाग उपाध्याय तथा विविध पदाधिकारी उपस्थित रहे । दिनांक 27/5 नुरपुर जीला के फतेहपुर शहर में कार्यकर्ता बैठक संप्पन हुई । प्रखंड के 50 से ज्यादा कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

दिल्ली क्षेत्र विश्व हिंदू परिषद कार्यकर्ता अभ्यास - वर्ग लुधियाना - पंजाब में संप्पन हुआ ।

दिल्ली - जम्मु - कश्मीर - हिमाचल - पंजाब हरियाणा प्रान्तो से विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारीयों का कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग लुधियाना के गुरुद्वारा में 10 दिवसीय वर्ग संपन्न हुआ । 150 से ज्यादा सभी कार्यकर्ता पदाधिकारी - भाई-बहन उपस्थित रहे । दिनांक 28/5 के दिन प्रशिक्षार्थीओं के समक्ष सामाजिक समरसता विषय का बौद्धिक श्रीमान देवजीभाई रावतजीने प्रस्तुत किया । सामाजिक समरसता निर्माण हेतु कार्यकर्ताओं की भूमिका - महत्त्व इस विषयमें रखा गया । आनेवाले समय में हमारे समरसता कार्य के द्वारा समरस समाज समर्थ भारत - निर्माण के हेतु "अस्पृश्यता मुक्त भारत" निर्माण करेंगे एसा संकल्प प्रशिक्षार्थीओं के द्वारा लिया गया ।

दिनांक 29/5 लुधियाना शहर में विविध जाति - बिरादरी संपर्क किया गया । मजहबी शीख परिवारो से बैठक संपर्क कर 'सामाजिक समरसता' की आवश्यकता संवाद - स्नेह निर्माण कीया गया । विश्व हिंदु परिषद के श्रीमान प्रगटसिंहजी समरसता प्रांत सह प्रमुख एवम् विविध शीख समाज के अग्रणीय भी सहभागी हुए थे ।

दिल्ली प्रान्त सामाजिक समरसता

दिल्ली प्रान्त सामाजिक समरसता की प्रान्त बैठक दिनांक 2 जुन को जंडेवाला देवीमंदिर विश्व हिंदू परिषद कार्यलय में संप्पन हुआ । कुल 12 जीलो से 27 पदाधिकारी उपस्थित रहे । मा. श्री करुणा प्रकाशजी का तथा श्रीमान देवजीभाई रावत जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

बैठक में अखिल भारतीय समरसता बैठक हैदराबाद की जानकारी - कार्य का आयोजन हुआ । आगामी दिल्ली प्रान्त में सभी जीलो में नियुक्ती पूर्ण हो तथा सामाजिक समरसता के विषय हेतु जन-जागरण-कार्यक्रम का आयोजन के बारे में विस्तृत चर्चा की गई । बैठक की समापन प्रान्त अध्यक्ष समरसता के मा.श्री रामचंद्र वर्माजीने कीया ।

दिनांक 3 जुन को इतवार को प्रात 10.30 बजे सामूदायक भवन, जोषी कोलोनी, मंडोली, दीह्री में सामाजिक समरसता गोष्ठी का आयोजन हुआ । 200 से ज्यादा लोगो ने भाग लीया । मा. श्री अशोककपुरजी प्रान्त समरसता प्रमुख, श्री पंकजजी भषीन तथा श्री राष्ट्रप्रकाशजी, श्री सुनील गुप्ताजी, संयोजक खेल-कूद प्रकोष्ट, जीला समरसता के श्री अजय मिश्राजी ने भाग लीया । कार्यक्रम का संचालन श्रीमती अनुपम मिश्रा तथा श्री मोनीका भार्गव ने कीया । पधारे हुए अतिथीओका स्वागत श्री महेश शर्मा, श्री चौधरी करणसिंह, श्री अशोक शर्मा, श्री अजय मिश्रा वगेरेने किया ।

अजयजी ओर उनकी टीम के सभी कार्यकर्ताओं के प्रयास से कार्यक्रम अत्यंत सफल - कडीधूप में रहा ।

पंडीत रामप्रसाद बिस्मीलजीको कोटी कोटी नमन उनकी जन्मज्यंति निमित्त

विदाई का सन्देश

(पूजनीय माताजी सादर वन्दे)

कल आपसे भेंट करके मेरा उत्साह दुगुना हो गया और में बड़े । हर्ष से प्राणत्याग करुंगा । और आशा है कि आप मेरी मृत्यु के पश्चात् भी इसी प्रकार शांत रहकर हर्षित होंगी कि आपके तुच्छ सेवक ने अपने देश सेवार्थ प्राण त्याग किये । जबकि रोशन, लाहिड़ी, अश्फाक को फाँसी दी जा चुकी है और मुझको भी एक घण्टे के बाद फाँसी दे दी जायेगी, मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि भारतवर्ष के नवयुवकों के प्रति अपना अन्तिम सन्देशा लिख छोड़ूँ । हमारी मृत्यु से किसी को क्षति और उत्तेजना हुई हो, तो उसको सहसा उत्तावलेपन से कोई ऐसा कार्य न कर डालना चाहिए कि जिससे मेरी आत्मा को कष्ट पहुँचे । यह समझकर कि अमुक ने मुखबरी कर दी अथवा अमुक पुलिस से मिल गया या गवाही दी, इसलिए किसी की हत्या कर दी जाये या किसी को कोई आघात पहुँचाया जाय, मेरे विचार में ऐसा करना सर्वथा अनुचित तथा मेरे प्रति अन्याय होगा । क्योंकि जिस किसी ने भी मेरे प्रति शत्रुता का व्यवहार किया है और यदि क्षमा कोई वस्तु है तो मैंने उन सबको अपनी ओर से क्षमा किया । इनके दो कराण हैं -

(१) भारतवर्ष का वायुमण्डल तथा परिस्थितियाँ इस प्रकार की हैं कि इसमें अभी दृढप्रतिज्ञ व्यक्ति बहुत कम उत्पन्न होते हैं ।

(२) मैं महर्षि दयानन्द का अनुयायी हूँ, जिन्होने अपने जहर देने वाले को अपने पास से रुपये दिये थे कि वह भाग जाय । यदि नवयुवकों के हृदय में कोई जोश, उमंग तथा उत्तेजना उत्पन्न हुई है तो उन्हें उचित है कि शीघ्र ग्रामों में जाकर कृषकों की दशा सुधारें, श्रमजीवियों की स्थिति को उन्नत बनावें, जहाँ तक हो सके साधारण जन-समूह को सुशिक्षा दें, ॐकद्दकल्थग के लिए कार्य करें **और यथाशक्ति दलितोद्धार के लिए प्रयत्न करें** । जब इतने काम होंगे तो जिन्हे दण्ड देने की इच्छा है वे लज्जित होंगे और मेरी आत्मा को शांति प्राप्त होगी । मेरी यही विनती है कि कोई भी घृणा तथा उपेक्षा की दृष्टि से न देखा जाय किन्तु करुणा सहित प्रेमभाव का बर्ताव किया जाए ।

गोरखपुर डिस्ट्रिक्ट जेल
१९-१२-२७
भवदीय
रामप्रसाद बिस्मिल

दलित साधु कन्हैया प्रभु बनेंगे जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर

सनातन धर्म के इतिहास में पहली बार ऐसा निर्णय

● आदिवासी, वनवासी रामुदाय के साधुओ को तो महामंडलेश्वर बनाया गया था, लेकिन किसी दलित को इस शीर्ष पद पर सुशोमित करने का अखाड़ा परिषद का यह पहला फेसला है । इससे देश भर में सामाजिक समरसता की दिशा में सुखद संदेश जाएगा – नरेन्द्र गिरि, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद ने सोमवार को प्रयाग में यमुना तट पर दलित साधु को महामंडलेश्वर बनाने की घोषणा की । सनातन संस्कृति के इतिहास में किसी दलित को महामंडलेश्वर उपाधि देने का अखाड़े का यह पहला निर्णय है । अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेद्र गिरि ने इसकी पुष्टि की । वही महामंत्री महंत हरि गिरि ने इसे सामाजिक समरसता की दिशा में बड़ा कदम बताया । उन्होंने कहा कि इससे कुंभ से पहले देश में सामाजिक गैर बराबरी और जातीय भेदभाव दूर करने में मदद मिलेगी ।

आजमगढ़ के ग्राम बरौनी दिवाकर पट्टी, थाना बिलरियागंज के निवासी कन्हैया कुमार कश्यप ने वर्ष २०१६ के उज्जैन स्थित सिंहस्थ कुंभ में पटियाला (पंजाव) काली मंदिर स्थित जूना अखाड़े के महंत पंचानन गिरि महारज से पहली वार संन्यास दीक्षा ली थी । तब महंत गजानन गिरि ने उनका नामकरण कन्हैया प्रभुनंद गिरि के रुप में किया था । कन्हैया कुमार से महंत प्रभुनंद गिरि तक का सफर तय करने वाले दलित साधु को यमुना किनारे मौज गिरि आश्रम मे पूर्ण संन्याम दिलाया गया । दलित साधु को महामंडलेश्वर बनाने का एलान काशी सुमेरु पीठ के स्वामी नरेद्रानंद सरस्वती महाराज की मौजूदगी में हुआ ।

नेशनल सेमिनार अप्रैल - 2017 - दिल्ली

समरसता कार्य में सावधानीयाँ

मा० दादा ईदाते जी चेरमेनश्री भटकती विमुक्त जाति आयोग, भारत सरकार

यह विषय ऐसा है कि इसके बारे में बोलते समय कहां से कहां लोग जाते है मालूम नहीं विषय क्या है हमारे सामने समस्या क्या है हमारे लाखों लोग कनवर्ट क्यो हो रहे है उनके सामने कौन से प्रश्न है ये ध्यान में लेकर किसी बात की चिन्ता और चर्चा करनी चाहिए अभी मैंने दो उदाहरण बताये थे एक बाला साहब का दूसरा गुरु जी का तो फिर हम अर्थ व्यवस्था में क्यों बाते कर रहे है कोई आवश्यकता नहीं है पूज्य गुरु जी ने कहा था कितने वर्ण बनाने हमें एक ही वरण बनाना है हिन्दू का तो ये हमारे मन से निकलता ही नहीं जो पूज्य गुरु जी ने कहा था केवल अस्पृश्य के बारे में नहीं है हमारी मानसिकता के बारे में भी है जो अन्दर बैठा है वो निकलना है पहली बात अभी वर्ण व्यवस्था का जो उदाहरण दिया पुरुष्षयुक्त का है और इसके बारे में दलित आन्दोलन में पराकोटि का द्वेष है इसके बारे में उसका अन्त क्या है वो अलग बात है में जानता हूं उसका अर्थ क्या है लेकिन हम जब समाज में जाते है तो समाज में क्या चर्चा चल रही है हमारे बारे में क्या है हम क्या कर रहे है उनको मालूम है ये देखों पूज्यनीय सर संघचालक सुदर्शन जी ने नागपुर में डॉ. अम्बेडकर के स्टेचू को माल्यापर्ण किया था इसलिए वो लोगों ने उसका शुद्धि करण किया सर संघचालक जी ने माल्यापर्ण किया इसलिए उस स्टेचू का शुद्धि करण कर दिया क्यों अरे आर.एस.एस. वाले का हाथ लग गया ये हमारे बारे में धारण है वो जब नांदेड़ में आये तो उनके विरोध में एक गरीब युवक ने एक काला झण्डा लेकर प्रदर्शन किया उसके सामने आ गये उस समय में तो वहां नहीं था फिर भी २२ घंटा बैठना पड़ता था..... मुझे वहां जाने के लिए तो एक दिन में उनके घर गया तो मैंने पूछा आपने क्या किया आपको सर संघचालक कुछ मालूम है सुदर्शन जी बारे में कुछ मालूम है क्या संघ के बारे में आपको क्या मालूम है जब में सब बाते बताई उनको तो उन्होंने क्षमा मांगी और मुझे वो दरवाजे तक लेकर आया गाड़ी पर बैठाया और कहा दादा फिर से आयेगे तो मेरे घर आ जाओ वो ऐसा कहा तो लोगों के मन में जो है उसका बदलाव करना चाहिए वो बदलना चाहिए यह हमारा काम है और वही विषय लेकर आओं वही संदर्भ लेकर इसको जानने में कोई आवश्यकता नहीं है इसलिए मैंने कहा कि आज हमारे सामने क्या है पूज्य बाला साहब देवरस जी ने कहा था अन्तर जातियां और अन्तर प्रान्तीया विवाह के कारण समरसता आ जायेगी हजम होता है बोलने में ठीक है भाषण में ठीक है व्यवहार में क्या गलत है व्यवहार में क्या होता है मैंने किन्हीं लोगों का राज्य विवाह किया है तो कोई कठिन नहीं रहता तो ये बात कैसा है कि हम भाषण करने के लिए चर्चा करने के लिए या विधिवत का प्रचार करने नहीं आये जो समस्या है उसको सुलझाने का मार्ग क्या है वो दुढ़ने के लिए आये है और

हमारे यहां जाकर हम कैसा करेंगे कैसी एक परिस्थिति लायेगें कि सब समाज हमारे साथ आ जाये एक तो समरसता का काम शुरु हुआ तो एक दलित आन्दोलन में उसके बारे में क्या शब्द था कि समरसता ये स्लो पोईजिंग है ये समता को नष्ट करने के लिए और सब लोगों को हिन्दुत्व के बारे में हमे अन्दर लेने के लिए वो सब पर स्लो पोईजिंग कर रहे है वहां से लेकर एक स्थिति ऐसी आ गयी कि एक रेलवे का नाम समरसता रेलवे हो गया मायावती समरसता के बारे में भाषण करने लगी वो राहुल गांधी समरसता के बारे में बोलने लगा यहां तक समरसता की आ गयी स्थिति कि डॉ. अम्बेडकर का जन्मदिन समरसता दिन ये हमारे प्राईमिनिस्टर से घोषित किया एक ३० वर्ष की लम्बी प्रोसेस है इसके कारण वो आये थे तो ये प्रोसेस ध्यान में लेना चाहिए और वो प्रोसेस ध्यान में लेकर इसके बारे में चिन्तन करना चाहिए । धार्मिक ग्रंथ प्रभु श्रीरामचन्द्र ने ऐसा किया वैसा उसका में उत्तर बहुत अच्छे ढंग से देता हूं वो बात अलग है लेकिन किया होगा और गलत किया हो तो देखेगें वो आज हमारे सामने क्या है हमारे सामने प्रश्न क्या है वो हम कैसे उसका उत्तर दे देगें ये हमे करना है समरसता के बारे में बहुत बड़ा चार-पांच घण्टे का भाषण दे सकता हूं उसमें कोई अन्तर नहीं है १४ बार ज्ञानेश्वरी में समरसता शब्द है में बता सकता हूं आपको वो बात नहीं है तो भी समरसता नहीं है तो भी ज्ञानेश्वरजी की क्या हालत हो गई है उनकी समझने की जानते है न आप तो समाज में ये सब भावना सायकोलोजिकल का चेंज है और सायकोलोजिकल एक सतत प्रक्रिया से होता है तो इसलिए मुझे ऐसा लगता है संत शक्तियां और संघ शक्ति इकठ्ठा कीजिए किसके लिए संत शक्ति के आधार पर जो करोड़ लोग उनका सुनते है वही लोग साथ आते है वही लोग विषय बताते है तो सबके साथ हम इकठ्ठा आते है तो समरसता का विषय हो जाता है मुझे ऐसा लगता है कि हम सब कार्यकर्ता है केवल विचार देने के लिए हम यहां नहीं आये है समरसता का मूलभूत विचार जो हमारा है वो एक दूजे के मन में कैसे लाये उनकी प्रक्रिया यहां से लेकर जाने के लिए आ जाये कभी-कभी हमारे कुछ पुराने मत रहते है वही बार-बार हम रखते है हमारे प्रोसेस में भी बहुत नयी-नयी बातें आयी है मुझे ये मालूम था कि पहले दिन जब कम्प्यूटर आ गया तो हमारे कार्यकर्ताओं ने इसका विरोध किया आज कम्प्यूटर के बिना किसी का चलता नहीं है कभी-कभी जब कुछ विषय आते है तो हम झट से उसके विरोध में रहते है तो ये जरा ध्यान में लेकर सब समाज को हमें हिन्दू संगठन करना है । और हिन्दू संगठन के लिए पुराने कुछ उसके संदर्भ देने की आवश्यकता नहीं है आज का दे सकते है गुरुवायू मंदिर का दे सकते है वहां एक मोर्चा कोम्युनिस्टों ने निकला कि यहां गुरुवायू मंदिर में सब लोगों को प्रवेश करना चाहिए और उन्होंने मार्च निकाला हमारे कार्यकर्ता सब बैठे मंदिर प्रशासन के साथे बैठे उन्होंने बताया तो प्रशासन ने कहा हमें कोई अडचन नहीं है तो उन्होंने कहा चलो हम उनके सामने जायेगें तो सब प्रशासन लेकर उनके समाने गये और कहा भाई साहब बहुत अच्छी बात है आप मंदिर में आना चाहते है तो चलो हम आप सब का सम्मान करते है उनको लाया गर्भगृह में लाया और उनका सम्मान कर दिया बात खत्म हो जाती है और एक नई शुरु होती है । नई शुरुआत होती है उसमें इस ढंग से हर जगह सब समाज हमारे हिन्दू समाज ये मेरा है में हिन्दू समाज का हूं ये प्रत्यक्ष कृति में लाना चाहिए नहीं तो जाति में जो विषय रहते है उसके इतने परिणाम अब तक हमने झेले है में मुख्य शिक्षक और कार्यवाह का उदाहरण देता हूं एक मुख्य शिक्षक के घर में कार्यवाह जब गये चर्चा चल रही थी चाय-पान चल रहा था तो शिष्य की माता जी ने बताया कि वो हमारी चाय नहीं लेंगे नहीं पीयेगें तो शिष्य बोला क्यों नहीं वो हमारे से श्रेष्ठ है तो कार्यकर्ता कुछ बोला नहीं चाय वगैरा हो गया दूसरे दिन वो आ गया और उन्होनें पूछा कि कल आपने ऐसा क्यों बताया भाई ऐसा है हमारा जो उद्योग है ना वो चमड़े से चप्पल बनाने का है और उनका जो उद्योग है वो चप्पल से आगे कुछ करने का है तो वो हमारे से श्रेष्ठ है तो हमारे साथ चाय कैसे पीयेगें अस्पृश्यता केवल समाज में हिन्दू है ऐसा नहीं है इतना ध्यान में रखना चाहिए इतना कठिन काम इसमें उत्तर मिल सकता है तो ये समरसत की मूल शाखा जो भूमिका है वो भूमिका रखते समय लोग हमें संघ का प्रतिनिधि मानते है हमारा मत माने संघ का मत मानते है ये ध्यान में रखकर कोई भी शब्द जिसके कारण समाज में भेद उत्पन्न हो कोई संघर्ष उत्पन्न हो कोई इस तरह का विचार मंथन में आमने - सामने हो जाये ऐसा हमारे शब्द से नहीं होना चाहिए तो इस तरह के उदाहरण जो है ना ये देने से पहले ५० बार सोचना चाहिए । और नई स्मृति आयी है पूज्यनीय बाला साहस देवरस जी का जीवन है पूज्यनीय गुरु जी का है कि जिन्होंने शुरुआत की अबी हमारे अशोक जी के बारे में हमारे सामने शब्द है कि उनकी श्रद्धांजलि सभा थी कौन - कौन थे उनकी श्रद्धांजलि सभा में में था देखा मैंने समरसता का असली रुप थे तो हमारे मन में चिन्तन क्या होना चाहिए कि समग्र समाज एक कैसा हो....१२,१३ स्वयंसेवक मार दिये गये उस समय देश में वायुमण्डल था पंजाब का दौरा करने के लिए पूज्यनीय बाला साहब देवरस जी गये और जब वापस आ गये बहुत अस्वस्थ्य थे ये देश आत्म सर्व भूतेषु : यह कहने वाला है यतपींडे वही ब्रह्मामंड कहने वाला है तो इस देश में ऐसी स्थितियां आये कि नई स्मृतियां नया आयाम उनको देना चाहिए तो उन्होंने एक संस्कृत के विद्वान थे हमारे नागपुर के उनको बुलाया और उनको कहा कि आप एक संस्कृत श्लोक तैयार करो कि जिसमें हमारे देश की सब विचारधारा एक है ये उसमें आ जाये एक उन्होंने दु:ख देखा देश में उसमें से उन्होंने एक नया प्रारुप दे दिया एक मंत्र दे दिया एक विश्व हिन्दू परिषद खड़ी हो गयी और उन्होंने विधिवत सभा में एक नई स्मृति का नींव डाला उन्होंने श्रीरामजन्मभूमि जो शिला न्यास तथा कामेश्वर चौपाल उनके हाथ से जो इसी तथा कथीत छोटी जाति का था उनके हाथ से धर्माचार्य, शंकराचार्य, साधु-सन्त सबकी उपस्थिति में मंत्रोचार सहित शिला न्यास हुआ ये ध्यान में लेकर आज के कालखण्ड में हर जगह हम कैसा ऐसा कर सकते है ये सब समाज को आत्म सम्मान लगे ऐसा विचार करना चाहिए ऐसा मुझे लगता है ।

सामाजिक समरसता प्रांत अभ्यास वर्ग

राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ (गुजरात) की और से प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 9, 10 जून, 2018 (शनि - रवि) दो दिवसीय कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग उमिया आर्टस एन्ड कोमर्स कोलेज, एस.जी. हाईवे, सोला, अहमदाबाद में संम्पन हुआ ।

इस अभ्यास वर्ग में समरसता गाँव गाँव के पुरे प्रांन्त से एवं विविध क्षेत्र जैसे विश्व भारती, विश्व हिन्दु परिषद, समाजिक समरसता अभियान... किसान संघ, भारतीय जनता पार्टी, लघु भारती, सेविका समिति जैसे प्रमुख जनसंगठित के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे ।

दो दिवसीय अभ्यास वर्ग में कुल सात सत्र हुए एवं अलग - अलग क्षेत्रो में प्रांत के प्रमुख पदाधिकारीओं द्वारा कार्यकर्ताओ को आगामी कार्ययोजना... स्व अनुथय कथन... सभी क्षेत्र के कार्यकर्ता द्वारा संगठन द्वारा समरसता से संलग्न हुए कार्यक्रम एवं आगामी होनेवाले कार्यक्रम का वृत कथन किया गया ।

इस अभ्यास वर्ग में समरसता मंच के अखील भारतीय सहसयोंजक श्री रविन्द्रजी किरकीरे पुरे समय रह कर मार्गदर्शन किया । संघ के अखिल भारतीय सह बौद्धिक प्रमुख श्री सुनिलभाई महेता, प्रांत संघ चालक श्री मुकेशभाई मलकान, प्रांत प्रचारक श्री चिंतनभाई उपाध्याय, प्रांत के सहकार्यवाह श्री किशोरभाई, श्री शैलेषभाई पटेल, समरसता मंच के अध्यक्ष श्री खेमचंदभाई, मंत्री श्री प्रकाशभाई परमारने उपस्थित रह कर अभ्यास वर्ग में मार्गदर्शन दिया ।

प्रांत प्रचारक श्री चिंतनबाई उपाध्यायजी ने सामाजिक समरसता के लिए एक विशेष योजना 2018-2019 के लिए जो तैयार की गई हे उस पर विशेष मार्गदर्शन करते हुए संगठन दृढीकरण एवं आगामी कार्यक्रमो के लिए योजना बनाने के लिए मार्गदर्शन दिया ।

जिल्ला - तालुका स्तर तक कार्यकरने वाली टोली जिसमे सभी ज्ञाती - समाज के लोगो का प्रतिनिधित्व हो वह देखना । एव जून - जुलाई तक एक दिवसीय बैठक तथा रक्षाबंधन पर सामाजिक अग्रणीओ को बुलाकर कार्यक्रम करना एवं संकल्प दिलवाना समरसता निर्माण हेतु ।

सितम्बर से दिसम्बर में करने के कार्यक्रम

समरसता यज्ञ / सामाजिक समरसता एकता संकल्प यज्ञ /

संमेलन - तालुका स्तर पर हो सभी ज्ञाती बिरादरी के लोगो की सहभागीता हो । संम्भव हो मंदिर के प्रांगण मे कार्यक्रम हो । मंदिर प्रवेश की योजना हो । समूह भोज हो ।

दूसरा उन्होंने ग्राम संपर्क योजना के बारे में कार्य योजना का प्रारुप समजाया । जनवरी मास में सामुहिक भारत माता पूजन, सामुहिक आरती पूजन, प्रसाद वितरण हो । गाँव के सभी ज्ञाति के लोग एवं सन भी उपस्थित रहे एसा प्रयास करना - छात्रावास संम्पर्क - समरसता गोष्ठी - संमेलन एवं महापुरुषो की जयंति भी मनाना - प्रचार विभाग के द्वारा साहित्य निर्माण सोसीयल मिडिया का उपयोग - एवं विविध क्षेत्र के जनसंगठनो को अफ्नी योजना बनाकर प्रस्तुत करने के लिए कहा ।

श्री सुनिलभाई महेताजी समरसता शब्द के जोर में स्पष्टीकरण करते हुए कार्यकर्ताओ को बहुत ही समर्पण भाव से समरसता का कार्य करने के लिए अह्वान किया । एवं आत्मीयता के साथ हमारा कार्य व्यवहार में दिखे - हमारे कार्य - कार्यक्रमो में उनकी सहभागिता बढे ऐसे प्रयास करने को कहा । अन्त में कार्यकर्ताओ की जिज्ञासा समाधान के साथ अभ्यास वर्ग संम्पन्न हुआ ।

अहेवाल रसेष रावल
प्रांत मंत्री - उ. गुजरात
समाजिक समरसता अभियान

पृष्ठ - ३ ''संपादकीय'

हम मानते है की बाहय परिस्थिति में है लेकीन एसा नहीं है । यश अपयश... सफलता... निष्फलता के बीज कार्यकर्ताओं के हृदय में होते है । कार्यकर्ता अपने सच्चे मन से हृदय में निश्चय कर कार्य करता है ''दृढनिश्यकर मुझे सकलता मिलेगी ही'' - तो जरूर सफलता - यश मिलेगा । पक्का विश्वास सोचकर हम समरसता के कार्य में लेगे भगवान हमे जरुर सफलता यश दिलायेगा एसा पक्का विश्वास के साथ...आगे. बढे....

अस्तु

संपादक

RAKESH CHEMICALS (CHHATRAL)
ASHWIN PATEL M.: 9376488802
RAVI PATEL M.: 9998946815
CHIRAG PATEL M.: 9724764292
HEAD OFFICE : Rakesh Plaza, 52, Shayona Estate, Opp. Meldi Estate, Prasang Party Plot Road, Gota, Ahmedabad - 380061.
Ph.: 079-65444145 - 146 - 147 - 148 E-mail : rakeshchem@ymail.com, rakeshchemicals@aol.com
BRANCH OFFICE : 4, Bansidhar Complex, Opp. Hotel Amirash, Village : Chhatral, Ta. : Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729
Ph.: 02764-234165 Mobile : 9376488804

समरसता गतिविधी

२१ मई इदौर शहर में सा.समरसता गोष्ठी कार्यक्रम । शहर के २०० से ज्यादा कार्यकर्ता बंधु भगिनी एवं प्रबुध्ध नागरिक सहभागी हुए । श्री देवजीभाई रावत केन्द्रिय मंत्री सा.समरसता विभाग सन्मान करते श्री दिनेशजी सैन - इदौर विभाग समरसता संयोजक तथा शहर के प्रबुद्ध नागरिक गण ।

दि. २२ मई इटारसी शहर मध्यभारत प्रांत में सामाजिक समरसता गोष्ठी कार्यक्रम आयोजन हुआ । जीला - शहर के ३०० से ज्यादा कार्यकर्ता बंधु उपस्थित रहे श्रीमान गजानन तिवारीजी, श्री संदीप पटेलीयाजी - विभाग मंत्री वि.हि.प., कुमारी श्री नेहाजी - दुर्गावाहीनी संयोजीका तथा श्री सुनिलजी यादव प्रांत प्रमुख समरसता, श्रीमान राजेन्द्रसिंहजी ठाकुर - प्रांत सहसमरता प्रमुख उपस्थित रहे ।

इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र दि. २० मई से ३० मई वि.हि.परिषद कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग गुरुद्वाराश्री भैणि साहिब, लुधियाणा, पंजाब में संपन्न हुआ २०० से अधिक कार्यकर्ता भाई-बहन पदाधिकारी उपस्थित रहे । २८ मई को समय और समर्पण विषय पर क्षेत्रिय प्रचारकश्री का सत्र रहा । मंच पर साथ में वर्गाधिकारीश्री राणाजी । सत्र-२ में सा.समरसता का विषय श्रीमान देवजीभाई रावतजीने रखा।

२५ मई सा.समरसता गोष्ठी जम्मु विहिप कार्यालय में संपन्न हुई । प्रांत संघचालक मा. श्री सचेतसिंहजी ब्रिगेडीयर, प्रांत वि.हि.प. अध्यक्षश्री लीलाकरणजी, कार्यकारी अध्यक्षश्री सुरेशजी, प्रांत मंत्रीश्री विशालजी, प्रांत समरसता प्रमुखश्री पुरुषोत्तमजी तथा प्रांत समरसता प्रमुख रा.स्व.संघ डॉ. विक्रांतजी और विविध जाति-बिरादरी के मुखिया श्री अमर क्षत्रिय राजपूत सभा श्री नारायणसिंहजी, डोगरा सदर सभा श्री गुलचेनसिंहजी, ब्रह्म समाज श्री वेदप्रकाशजी, महाजन सभा श्री रमेश गुप्ताजी, कश्यप समाज श्री मुरालीलाल मल्होत्रा, बरवाला समाज, वाल्मीकी समाज ईत्यादी मुख्या ६५ की संख्या में उपस्थित रहे ।

दि. २७ मई हिमाचल प्रांत पालमपुर राधाकृष्ण मंदिर सा.समरसता की बैठक तथा गोष्ठी का आयोजन हुआ ५५ से ज्यादा जिला विभाग विहिप - बजरंगदल - दुर्गावाहिनी के कार्यकर्ता उपस्थित रहे । इस मौके पर श्री कांगड़ा चम्बा के उपाध्यक्ष, बजरंगदल के जिला संयोजक अक्षयजी, संदीप शर्माजी जिला अध्यक्ष श्रीमान आदर्श शर्माजी तथा विभाग उपाध्यक्ष राजेश व्यासजी खास उपस्थित रहे । पालमपुर प्रेस क्लब में प्रेस वार्तालाप का भी आयोजन हुआ ।

दि. ३० मई हरियाणा - रोहतक प्रांत कार्यालय विहिप समरसता गोष्ठी का आयोजन हुआ ७० से अधिक विविध जाति-बिरादरी के मुखीया उपस्थित रहे । मा. श्री प्रद्युमनजी प्रांत मंत्री विहिप ने समरसता की भुमीका रखी जिला के अध्यक्ष शीशपालजी तथा डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा प्रांत समरसता अध्यक्ष एवं अमीतजी प्रांत समरसता प्रमुख उपस्थित रहे ।

Registration under Postal Registration No. AHD-C/83/2017-2020
Valid upto 31st December 2020. RNI Reg. No. GUJHIN/2016/70892
Permitted to Post at AHD PSO on 16th of Every Month. Published on 10 June-2018

दि. ३० मई हरियाणा - रोहतक शहर में शिक्षा भारती सरस्वती विद्यालय आचार्य समक्ष समरसता का विषय रखते श्री देवजीभाई रावत विद्यालय के ४० आचार्य बंधु-भगिनी उपस्थित रहे साथ में विद्यालय के प्रधानाचार्यजी संजयजी सोनी तथा श्री अमीतजी, श्री इन्द्रजीतजी भारद्वाज उपस्थित रहे।

दि. ३ जून सामुदायिक भवन - जोषी कोलोनी, मंडोली, दिल्ली सा.समरसता संमेलन का आयोजन किया गया १५० से ज्यादा कार्यकर्ता बंधु भगीनी उपस्थित रहे। श्री अशोक कपुरजी, श्री पंकजजी भसीन, श्री राष्ट्रप्रकाशजी, श्री सुनीलजी गुप्ता तथा श्री अजयजी मिश्रा समरसता संयोजक वगेरे कार्यकर्ता उपस्थित रहे। श्रीमती अनुपम मिश्रा, श्रीमती मोनीका भार्गवजी ने कार्यक्रम का संचालन कीया।

सार्वजनिक गोष्ठी गाजियाबाद। "अस्पृश्यता मुगलकाल की देन है" विषय पर एक सेमिनार का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता के नाते मा.श्री विजयसोनकर शास्त्रीजी - पूर्व अध्यक्ष सा.समरसता अभियान वर्तमान प्रवक्ता भाजपा ने विषय रखा। मंच पर विजयशंकर तिवारीजी एवं अन्य पदाधिकारी गण।

सामाजिक समरसता मंच गुजरात तथा सेवा भारती गुजरात के द्वारा अनुसूचित जाति समाज के युवा विद्यार्थी जिन्होने UPSC और GPSC परीक्षा में सफलता प्राप्त की उनका सन्मान समारोह कार्यक्रम दि. १० जून साहित्य परिषद होल कर्णावती में संपन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष के नाते महामहीम राज्यपाल गुजरात श्री ओ. पी. कोहली साहबने सभी सफलता प्राप्त विद्यार्थीओ को शुभकामनाई दी। इस कार्यक्रम में रा.स्व.संघ के अ.भा. सह बौधिक प्रमुख मा.श्री डॉ. सुनिलजी महेता, एड. डी.जी. गुजरात पुलिस के मा. श्री अनिलजी प्रथम, डॉ. अमृतभाई कडीवाला तथा खेमचंदभाई पटेल खास उपस्थित रहे शहर के गणमान्य प्रबुध नागरिक उपस्थित रहे।

मध्य भारत प्रांत गंज बसौदा शहर में वाल्मिकी समाज के बंधुओ का सन्मान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सामाजिक स्वच्छता सैनिक पुरस्कार से सभी को सन्मानीत किया गया। मंच पर श्रीमती, श्रीमान सुनिलजी यादव - समरसता प्रांत प्रमुख वगेरे।

Printed, Published and Owned by DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT and Printed at Sudarshan Graphics, Basement, Tirupati Avenue, Pushpakunj Society, Nr. Apsara Cinema, Kankaria, Ahmedabad - 380 028 and published from Dharmada Davakhana, Rabari Vasahat, Nr. Dandi Bridge, Gandhi Ashram, Ahmedabad - 380 027. Editor - DEVJIBHAI JEHABHAI RAVAT

Book-Post

प्रतिष्ठा में, _____